असम सेन्टर फॉर रूरल डेवलपमेण्ट (ACRD)

गुवाहाटी, असम

मूल्यांकन रिपोर्ट

(दिनांकः 11 अक्टूबर, 2006)

ACRD को “आशा” का सहयोग 2003 से हुआ है, गुवाहाटी से 50 किलोमीटर दूर कामरूप जिले के एक गांव में बोनपुरा में एक विद्यालय का निर्माण ‘आशा’ के सहयोग से कराया गया है. वर्तमान में बोनपुरा एवं एक अन्य केन्द्र नरटप हाईस्कूल में शिक्षकों के मानदेय का सहयोग ‘आशा’ के स्टैमफोर्ड चेप्टर द्वारा दिया गया है. इस प्रयास को देखने के लिये हमे इन दोनो केन्द्रों पर जाना था, हमारी असम यात्रा के दौरान हमने प्रयास किया कि हमारा वहां जाना बिना किसी पूर्व सूचना के हो, लेकिन इन केन्द्रों की दूरी एवं Location नहीं पता होने के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो सका. अतः ACRD की Executive Director डा. सुनीता जी को हमने फोन किया और 11 अक्टूबर को केन्द्रों पर जाने की इच्छा व्यक्त की, हम आशा दर्शन प्रोजेक्ट देखने के बाद 10 अक्टूबर की शाम गुवाहाटी स्थित ‘टैग्स’ (तामूलपुर आंचलिक ग्रामदान संघ) के अतिथि निवास पर आ गये, यहीं बाद में डा. सुनीता जी आईं, जिनसे प्रोजेक्ट के बारे में सामान्य जानकारी मिल गयी, तय हुआ कि अगले दिन सुबह 8 बजे हम पहले बोनपुरा जायेंगे और बाद में नरटप पहुचेंगे, उन्होंने बताया कि दोनो केन्द्रों पर हमारे आने की सूचना दे दी गयी है.

अगले दिन डा. सुनीता जी सुबह ठीक 8 बजे अपने वाहन से आ गयीं, एक एम्बुलेंस थी, यह भारत सरकार के Tribes Affair Ministry के सहयोग से चलाई जाने वाली ‘मोबाईल डिस्पेन्सरी’ है.

हम (गोविन्द शर्मा, प्रनब सईकिया और मैं) बोनपुरा के लिये चले. (प्रनब ‘आशादर्शन’ के कार्यकर्ता हैं इन्होंने आसामी भाषा में संवाद में हमारी काफी सहायता की)

बोनपुरा कामरूप जिले के पूर्वी दिशा में दिमोरिया ब्लाक के अन्तर्गत आता है. गुवाहाटी से अपर आसाम जाने वाले हाईवे पर स्थित जागीरोड से कुल 9 किलोमीटर सम्पर्क मार्ग पर चल कर हम 10 बजे बोनपुरा पहुंच गये. आज बारिश हई थी जिस कारण अन्तिम 3 किलोमीटर का मार्ग काफी परेशानी वाला हो गया था. बोनपुरा गांव में मुख्यतः बंगाली और दलित लोग रहते हैं. आय का प्रमुख स्रोत मजदूरी एवं खेती है. यहां के लोग मजदूरी करने बाहर भी जाते हैं. बोनपुरा स्कूल एक खुले स्थान पर बना है, यह गांव के

ही दो निवासियों द्वारा दान में दी गयी भूमि है, जिसमें एक 60 फीट गुणा 20 फीट का हाल एवं 60 फीट गुणा 8 फीट का एक बरामदा बना है, यह 'आशा' के सहयोग से गतवर्ष बनाया गया है, इसके अतिरिक्त एक टिन शेड भी है, जो पहले से ही यहां था.विद्यालय आकर्षक लग रहा था. इस समय विद्यालय में त्रैमासिक (Quarterly) परीक्षा चल रही थी 2 शिक्षक एवं 95 बच्चे यहां हैं जिनमे से आज 78 बच्चे आये थे, शिशु कक्षा के बच्चे आज नहीं आये थे. बोर्ड पर प्रश्न लिखे थे और बच्चे उसका उत्तर अपनी कॉपी पर लिख रहे थे. हमने कुछ सामान्य प्रश्न बच्चों से पूछे तो उनमें से अधिकांश के सही उत्तर मिले. कक्षा 1 और 2 के बच्चों के ज्ञान का स्तर ज्यादा अच्छा नहीं लगा, इसका कारण शिक्षकों का प्रशिक्षण न होना लगता है. बच्चों की परीक्षा के कारण हमने उनसे अधिक बात करना उचित नहीं समझा. बच्चे साफ सुथरे कपड़े पहन रखे थे, हमने एक गांववासी किशोर से पूछा कि 'बच्चे रोज साफ कपड़े पहन कर आते हैं?' तो उसने कहा कि "पिछली बार एक दीदी आयीं थीं तो बच्चों का कपड़ा गन्दा होने पर बहुत नाराज थीं तब से बच्चे कपड़ा साफ पहन कर आते हैं, लेकिन आज तो नया पहन कर आये हैं".

यहां के दो शिक्षकों श्री हरिशरण मण्डल एवं श्रीमती दीपाली डेका से हमारी काफी बात हुई, उन्होंने बताया कि उन्हें रू 1500 प्रतिमाह की दर से जनवरी 2006 से मानदेय मिल रहा है, भुगतान गुवाहाटी जाकर लाना होता है. इन दोनो शिक्षकों को कोई शिक्षक प्रशिक्षण नहीं मिला है. बच्चों की उपस्थिति 70 प्रतिशत तक होती है.बच्चों से 2 से 5 रूपये प्रतिमाह फीस ली जाती है किन्तु 40 प्रतिशत बच्चे ही दे पाते हैं, इस पैसे का व्यय स्कूल की स्टेशनरी में किया जाताा है.उन्होंने बताया कि 'एसीआरडी' से सुनीता मैडम पिछले एक वर्ष में 3 बार आयी हैं.

हमारे केन्द्र पर आने के बाद कई ग्रामवासी भी आ गये. श्री तरून मन्डल एवं श्री अर्जुन मण्डल जिन्होनें यह जमीन स्कूल के लिये दान में दी है, शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री मनमोहन राय एवं अन्य ग्राम वासी श्री इन्द्र जीत, श्री निर्मय इत्यादि ने जिस तरह एक स्वर में बच्चों के लिये बच्चों के लिये मिड डे मील की मांग की उससे साफ लग रहा था कि उनकी पहले से ही तैयारी थी कि मिड डे मील की बात करनी है. हमने पूछा कि मिड डे मील क्यों देना जरूरी है? तो बताया गया कि सरकारी स्कूल (एकनामोजरी गांव) में दिया जाता है. यह स्कूल यहां से 2 किलोमीटर दूर है, जहां कक्षा 8 तक कक्षायें चलती हैं, मेरे यह कहने पर कि आपको अच्छी शिक्षा चाहिये

या मिड डे मील ? तो वे चुप थे. इस प्रश्न पर अलग से शिक्षकों से बात करने पर उन्होंने कहा कि मिड डे मील देने से बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी.

स्कूल में एक हैण्डपंप था जो पिछले 5 माह से खराब होने के बाद खोलकर अध्यक्ष के घर पर रखा है, बच्चों को आसपास के घरों में पानी पीने के लिये जाना होता है, इस हैण्डपंप की मरम्मत में मात्र रू.4,000.00 का व्यय होना है किन्तु वे लोग इसके लिये 'एसीआरडी' या 'आशा' से उम्मीदे लगाये हैं. इसी विद्यालय परिसर में हर वर्ष आपसी चन्दे से दुर्गा पूजा का कार्यक्रम होता है जिसमें लगभग रू.15,000.00 तक का व्यय होता है, हमने उन लोगों को सलाह दी कि इस व्यय में थोड़ी कटौती एवं ग्राम पंचायत निधि से पहले हैण्डपंप बनवा दीजिये तो वे सहमत हुये.हमसे बाथरूम और टायलेट बनवा देने की भी मांग की गयी.

हमने गांव में जाकर अन्य ग्राम वासियों से भी बात की, ये सभी विद्यालय से संतुष्ट हैं, और आशा द्वारा स्कूल भवन बनवा देने से अति प्रसन्न हैं.किन्तु यहां के लोगों की अपेक्षा अधिक है मैंने 'आशा' के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि हम केवल ऐसे प्रयास को ही सहयोग कर पायेंगे जिसमें गांव का पूरा सहयोग हो और जिससे शिक्षा का स्तर बढ़े. वे सभी लोग काफी प्रभावित थे, उनकी मांग पर हमने कोई आश्वासन नहीं दिया. उनसे पता चला 'एसीआरडी' ने शिक्षा के अतिरिक्त स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूह, स्वावलम्बन इत्यादि दिशा में अभी कोई प्रयास इस गांव में नहीं किया है.

यहां से हम शिक्षकों एवं ग्रामवासियों से विदा लेकर नरटप हाईस्कूल के लिये निकले.यहां से लगभग 30 किलोमीटर कामरूप जिले के दक्षिणपूर्वी छोर पर मेघालय की पहाडियों से लगे हुये, गुवाहाटी अपर असम हाईवे से 5 किलोमीटर सम्पर्क मार्ग पर स्थित इस स्कूल की स्थापना 1988 में हुई. यह भी एक 'वेन्चर स्कूल' है.स्कूल की कुल 11 एकड़ भूमि है जिसमें 6 कमरे बने हुये हैं, जिसमे 4 कमरों में कक्षा चलती है, एक कमरे में कार्यालय है और एक में स्टोर है.यहां कक्षा 8,9 एवं 10 की कक्षायें चलती हैं, कुल 255 छात्र छात्रायें हैं, सामान्यतया लगभग 75 प्रतिशत उपस्थिति रहती है.

इस स्कूल से लगा हुआ सरकारी प्राइमरी विद्यालय है, जहां पढ़ाई अच्छी होती है. इस स्कूल में 6 से 8 किलोमीटर तक से छात्र पढ़ने आते हैं, ये छात्र लालुंग, कर्बी, नेपाली, ट्री ट्राइब, बंगाली और आसामी समुदाय के हैं. यहां

से सबसे समीप हाईस्कूल सोनापुर गांव में है जिसकी दूरी यहां से 10 किलोमीटर है.
जब हम पहुंचे तो 1.30 बजे थे, यहां भी परीक्षा चल रही थी कक्षा 8 और 9 के छात्र पेपर दे चुके थे लेकिन उन्हें रोक रखा गया था, हमने छात्रों से बात की, पहले तो वे संकोच कर रहे थे क्यों कि शिक्षक एवं सुनीता जी भी साथ थीं, हमनें उन लोगों को अनुरोध कर हटाया, इसके बाद छात्र मुखर हुये. सामान्य प्रश्नों का उत्तर तो वे दे पा रहे थे लेकिन गणित एवं विज्ञान के प्रश्नों में रूक रहे थे, छात्राओं ने गीत इत्यादि सुनाये. उन्होंने बताया कि यहां खेलने के लिये फुटबॉल, वॉलीबाल, डिस्क इत्यादि मिलती है, संगीत की भी कक्षा अब चलने लगी है, किन्तु वाद्य यन्त्र न होने के कारण अभी व्यवस्थित नहीं है. यहां सभी बच्चों से प्रतिमाह शुल्क रू 25 लिया जाता है, उन्होंने बताया कि विद्यालय में समय समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद विवाद प्रतियोगिता, खेल, निबन्ध लेखन इत्यादि होते रहते हैं. यहां कोई स्वास्थ्य कार्यक्रम कभी नहीं चलाया गया है, विद्यालय के पीछे पड़ी 9 एकड़ भूमि पर अब तक कोई प्रयास नहीं किया गया है. यहां एक हैण्डपंप है किन्तु खराब है और पानी पास के कुयें से लाया जाता है. दो फिल्टर हैं लेकिन उसका पानी बच्चों के लिये पर्याप्त नहीं हो पाता है. बच्चों ने पुस्तकालय एवं वाद्य यन्त्रों की हमसे मांग की. लगभग 2.45 पर सभी बच्चे घर चले गये.
इसके बाद हमने विद्यालय के शिक्षकों के साथ अलग अलग बातचीत की और एक बैठक भी की इस बैठक में शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री प्रिय नाथ डेका भी थे उन्होंने बताया कि शिक्षा समिति में कुल 21 सदस्य हैं और 3 माह पर बैठकें होती हैं, किन्तु 8 से 10 सदस्य ही सक्रिय हैं. हमने कुछ रजिस्टर भी देखे जिससे लगा कि कक्षा में सामान्यतया 75 प्रतिशत उपस्थिति रहती है. हेडमास्टर श्री नन्देश्वर जी ने बताया कि हम लोगों को मानदेय क्रमशः रू. 1,500, 1,200 एवं 1,000 प्रतिमाह की दर से मिलता है गुवाहाटी जाकर लाना होता है. उन्होंने बताया कि लगभग 85 प्रतिशत बच्चे 25 प्रतिमाह शुल्क दे पाते हैं. जब मैंने पूछा कि “तो प्रतिमाह लगभग रू. 5,000 जो शुल्क से प्राप्त होते हैं उसका क्या होता है?” उनका जवाब था कि कुछ पैसा तो विद्यालय स्टेशनरी के लिये व्यय किया जाता है, शेष के बारे में शिक्षा समिति तय करती है. बैठक के दौरान जब अध्यक्ष और हेडमास्टर ने पुस्तकालय, वाद्य सामग्री और 2 नये शिक्षकों के मानदेय की बात की तब हमने उन्हें ‘आशा’ के बारे में विस्तार से बताया कि किस तरह विभिन्न

प्रकार के कठिन प्रयास से पैसे एकत्र कर ‘आशा’ किसी शिक्षा के प्रयास को सहयोग करती है. हमने कहा कि आपके पास 60,000 प्रतिवर्ष की आय शुल्क से हो रही है उसका उपयोग इन बातों के लिये करिये, आपके यहां वर्तमान में 8 शिक्षक हैं जबकि कक्षायें कुल 4 ही हैं (कक्षा 8 अ एवं ब, कक्षा 9 तथा कक्षा 10) फिर नये शिक्षकों की आवश्यकता नहीं लगती यदि आप नये शिक्षक रखते हैं तो शुल्क से प्राप्त धन से उनके मानदेय की व्यवस्था कीजिये, तो वे सहमत हुये. हमने उन्हें यह भी कहा कि आपके विद्यालय की 9 एकड़ उपजाऊ भूमि खाली पड़ी है उसमे कोई प्लांटेशन करा दीजिये तो अच्छी आय हो सकती है हमने नलबारी जिले की ‘आशादर्शन’ प्रोजेक्ट का उदाहरण भी दिया, इस पर अध्यक्ष श्री डेका ने कहा कि ‘आप जब अगली बार आयेंगे तो इस भूमि पर तामूल के पौधे लगे हुये पायेंगे’.हमने शिक्षा के स्तर और सामान्य ज्ञान बढ़ाने को लिये प्रयास करने का भी सुझाव दिया.हमने पूछा कि एक शिक्षक पिछली बार ‘आशा’ की एक सहयोगी से नाराजगी व्यक्त कर रहे थे उनकी नाराजगी दूर हो गई है या नही? तो अध्यक्ष जी ने कहा कि अब कोई नाराज़गी नहीं है. हमने उन्हें सुझाव दिया कि विद्यालय के सरकारीकरण का प्रयास और स्वावलम्बन की दिशा में सार्थक कोशिशें आवश्यक हैं, जिससे आपकी ‘आशा’ या ‘एसीआरडी’ पर निर्भरता न रहे. हमने सभी को सुझाव दिया कि पुस्तकालय के लिये उपयोगी पुस्तकों की एक सूची तैयार करके प्रकाशकों से मूल्य पता कर एक प्रस्ताव “आशा” को भेजिये, सूची में विशेषकर साहित्य, विज्ञान, पर्यावरण, इतिहास इत्यादि विषयक पुस्तकों को अवश्य शामिल करें, हमने स्थान के बारे में पूछा तो बताया गया कि स्टोर वाले कमरे का आधा भाग पुस्तकालय के प्रयोग में लाया जायेगा, यह् स्थान हमें ठीक लगा. हमें बताया गया कि सुनीता मैडम पिछली बार जून 06 में आयीं थी, पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने हेतु, तब से ‘एसीआरडी’ से कोई नहीं आया.

इसके बाद हमने सबके साथ में भोजन किया और वापस चले, चलते समय हमने स्कूल के टॉयलेट में लम्बे समय से ताला बन्द रहने पर अपनी नारज़गी हंसते हुये व्यक्त की और कहा कि जो सुविधायें यहां उपलब्ध हैं पहले उनका पूरा उपयोग जरूरी है.

नरटप हाईस्कूल में बच्चों एवं शिक्षकों से सम्बन्धित आंकड़े निम्न सारिणी में हैः

Table -1

S.No.	Class	Boys	Girls	SC	ST	OBC	Total
1	VIII A	24	26	42	05	03	50
2	VIII B	40	19	52	04	03	59
3	IX	36	46	61	10	11	82
4	X	22	42	58	02	04	64

Table-2

S.No	Teachers/Staff Name	Responsibility	Qualification	Experience	Honorarium PM
1	Shri Nandeshwar Kumar	Head Master	B.A.	11 years	1500.00
2	Mrs. Sabita Das	Astt. Teacher	B.A.	15 Years	1200.00
3	Miss Prabha Das	Astt. Teacher	B.A.	12 Years	1200.00
4	Shri Hareshwar Datta	Astt. Teacher	B.Sc.	09 Years	1200.00
5	Shri Bhagwan Pd. Chaudhary	Astt. Teacher	B.Sc.	08 Years	1200.00
6	Miss Lakhita Deka	Astt. Teacher	B.A.	05 Years	1200.00
7	Mrs. Ramila Tumung	Astt. Teacher	B. Mus	01 Year	1200.00
8	Shri Bapan Tumung	Astt. Teacher	B.A.	0 Year	Honorary
9	Shri Tarun Rahang	LDA	HSS	17 Years	1000.00
10	Shri Jatil Deka	Grade-IV	X	17 years	1000.00

वापसी में हमने डा. सुनीता जी से पूछा कि इस विद्यालय में शुल्क के रूप में प्राप्त धन का क्या होता है? तो उन्होंने कहा कि मैंने कभी जानकारी नहीं करनी चाही. रास्ते में हमने 'एसीआरडी' के अन्य प्रयासों के बारे में सुनीता जी से जानकारी प्राप्त की. 'एसीआरडी' कामरूप जिले के चयानी ब्लाक में स्वयं सहायता समूह बना कर संगठन का कार्य कर रही है, इस कार्य को IGSSS का सहयोग प्राप्त है. गत वर्ष ऐड (AID) के सहयोग से मोरिगांव ब्लॉक में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में हैण्ड पंप, झोंपड़ी बनाने एवं फिशरी पॉण्ड बनाने का काम किया गया था. इसके अतिरिक्त Tata Tea और CASA संस्थाओं के सहयोग से income generation और स्वास्थ्य का काम हो रहा है. इसी क्रम में हल्दी की खेती कराई गयी है जो सफल प्रयास सिद्ध हो रही है. Blue Cross के सहयोग से Health camps लगाये गये हैं. आगे नशामुक्ति के लिये कार्य करने की भी योजना है.

डा. सुनीता जी CNRI (Confederation of NGOs in Rural India) की मेम्बर हैं, और पूर्वोत्तर के प्रदेशों में उत्पादन होने वाली वस्तुओं के लिये बाजार उपलब्ध कराने की दिशा में विशेष प्रयास कर रही हैं उन्होंने बताया कि 'आशा' के सहयोग से चलाये जा रहे शिक्षा कार्यक्रम के लिये अभी तक कोई मॉनीटर नहीं निशिचित किया गया है, लेकिन जल्द ही किसी की नियुक्ति की जायेगी

और वह बाइक से जाकर नियमित प्रतिमाह दोनों केन्द्रों पर जाकर मूल्यांकन करेगा. उन्होंने बताया कि हम 'आशा' के पैसे की आडिट रिपोर्ट ऑडीटर से लेकर शीघ्र भेज देंगे. उन्होंने हमे अक्टूबर 2005 से मार्च 2006 तक के आशा से प्राप्त धन का व्यय का विवरण दिया जो निम्न है:

1. शिक्षकों का मानदेय: बोनपुरा: 18,000.00
2. शिक्षकों का मानदेय: नरटप: 64,400.00
3. मॉनिटरिंग् व्यय: 18,000.00
4. विविध व्यय: 544.00
5. आडिट व्यय: 1,000.00

कुल व्यय: 101,744.00

<u>हमारे आकलन एवं सुझाव:</u>

1. 'आशा' द्वारा सहयोग किये जा रहे दोनो केन्द्र एक **'वेन्चर स्कूल'*** हैं, जिसे प्रारम्भ करने में स्थानीय सहभागिता रही है, ये दोनो केन्द्र स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक और उपयोगी हैं अत: इनको 'आशा' का सहयोग आगे भी जारी रहना चाहिये.
2. दोनो केन्द्रों के स्थानीय समाज एवं टीम की 'आशा' से अत्यधिक अपेक्षा है, इसी अपेक्षा के कारण उनकी नई नई मांगे आती रहती है, 'एसीआरडी' और 'आशा' को चाहिये कि स्थानीय समाज को स्पष्ट रखें कि 'आशा' असीमित सहयोग नहीं कर सकती अत: उन्हें आने वाले वर्षों में बाहरी सहायता पर निर्भरता कम करने के लिये प्रेरित करना चाहिये.
3. शिक्षकों का किसी तरह का प्रशिक्षण नहीं हो सका है, 'आशा' की कार्यकर्ता द्वारा पूर्व में सुझाव दिये जाने के बावजूद अभी तक इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं हुआ है. विशेषकर बोनपुरा में शिक्षकों का प्रशिक्षण अवश्य कराना चाहिय क्योंकि छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिये शिक्षक की कुशलता आवश्यक है, साथ ही यहां एक और नये शिक्षक की आवश्यकता है जिससे छात्र शिक्षक अनुपात ठीक हो जाय. मेरा सुझाव है कि 'आशा' की एक और प्रोजेक्ट "आशा दर्शन" के शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम तामूलपुर (बक्सा जिले में) में होता रहता है, वहां इन शिक्षकों को भेज कर प्रशिक्षण प्राप्त कराया जा सकता है. इस सम्बन्ध में सुश्री बीजू बोरबरूआ (91-9435198562) से सम्पर्क किया जा सकता है. (हमने सुनीता जी को भी यह सुझाव दिया है, और प्रनब भी साथ ही थे)

4. बोनपुरा स्कूल में खेल की सामग्री की आवश्यकता है जिससे छोटे बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाई जा सके. यहां के बच्चों के लिये पुस्तकों की एक छोटी लाइब्रेरी उपयोगी रहेगी.

5. बोनपुरा स्कूल में मिड डे मील देने के बारे में हमारा सुझाव है कि इस आधार पर कि "सरकारी स्कूल में मिड डे मील दिया जाता है इस लिये दिया जाना चाहिये" उचित नहीं है, हां न्यूट्रीशन सपोर्ट के रूप में सप्ताह में 2 या 3 दिन रेडीमेड आइटम दिया जा सकता है, किन्तु इस कार्य के लिये विद्यालय का समय कम से कम एक घंटे बढ़ाना चाहिये. साथ ही 'एसीआरडी' को इस कार्य की मॉनिटरिंग विशेष रूप से करनी होगी. बोनपुरा के बच्चों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराना चाहिये, यह कठिन नहीं है क्योंकि 'एसीआरडी' के पास मोबाइल डिस्पेन्सरी भी है और स्वास्थ्य कैंप लगाने के लिये अन्य स्रोत से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त है.

6. बोनपुरा स्कूल में स्थानीय सहयोग से और अन्य स्रोत से हैण्डपंप ठीक कराना आवश्यक है.

7. नरटप हाईस्कूल में आगे और शिक्षकों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता हमें नहीं लगती है, अगर स्थानीय टीम को लगता है कि और शिक्षक चाहिये तो शुल्क से प्राप्त धन का उपयोग करने को कहा जाना चाहिये.

8. नरटप हाईस्कूल में यदि एक पुस्तकालय जिसमें साहित्य, विज्ञान, पर्यावरण, इतिहास, सामान्य ज्ञान की पुस्तकें शामिल हों की स्थापना की जाय तो उपयोगी होगा.

9. नरटप हाईस्कूल की टीम और 'एसीआरडी' को चाहिये कि यहां ऐसे उपाय किये जायं जिससे बाहरी स्रोत से आर्थिक निर्भरता धीरे धीरे समाप्त की जा सके. 9 एकड़ भूमि का समुचित उपयोग होना आवश्यक है.

10. नरटप हाईस्कूल में शुल्क से प्राप्त सहयोग से हैण्डपंप की मरम्मत और वाद्य यन्त्र (Musical Instruments) की व्यवस्था की जानी चाहिये, अन्य उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना चाहिये जैसे खेल का मैदान, टॉयलेट.

11. नरटप हाईस्कूल के कक्षा 10 के छात्रों का शैक्षिक भ्रमण पर भेजना एक अच्छा प्रयास है, विद्यालय में विभिन्न विषयों के expert resourse persons को बाहर से बुला कर यदि कार्यशालायें की जाय तो अत्यंत उपयोगी रहेगा.

12. दोनों गांवों में, गांव वालों के साथ शिक्षा के अतिरिक्त अन्य मुद्दों जैसे स्वास्थ्य, पंचायत, वितरण प्रणाली, जागरूकता, संगठन, स्वावलम्बन इत्यादि क्षेत्र में भी 'एसीआरडी' को प्रयास करना चाहिये. गांव वालों को अपनी

समस्याओं को विभिन्न अधिकारियों या सरकार तक पहुंचाने को लिये पोस्टकार्ड लिखने के लिये प्रेरित करना चाहिये.

१३. 'एसीआरडी' की भूमिका अभी केवल इन स्कूलों को धन की उपलब्धता कराना ही है, ऐसा लगता है. उसे शिक्षा के स्तर सुधारने के लिये भी प्रयास करना चाहिये, इसके लिये नियमित मॉनिटरिंग आवश्यक है, केवल वर्ष में २ या ३ बार कुछ घण्टे के लिये वहां जाने से कुछ सार्थक परिणाम नहीं मिलेगा.

१४. रेशम कीट पालन, शूम और तामूल का प्लांटेशन, मधुमक्खी पालन, हल्दी की खेती इत्यादि के बारे में गांववासियों को प्रेरित करना चाहिये जिससे आर्थिक स्तर में सुधार आ सके. हस्त कला के उत्पादनों के लिये भी प्रयास करना चाहिये.

*__*वेन्चर स्कूल*__* ***(VentureSchool)***: असम का "वेन्चर स्कूल" एक उल्लेखनीय प्रयास है. मुझे पता नहीं है कि इस तरह का कोई प्रयास अन्य किसी राज्य में है या नहीं. ये वेन्चर स्कूल 20 से 25 वर्ष पूर्व अधिकांश गांवों में, गांव वालों के सहयोग से किसी सार्वजनिक स्थान पर बनाये गये थे, उन स्कूलों के पास काफी खुली जगह भी है. गांव के अथवा आस पास के किसी पढ़े लिखे व्यक्ति की नियुक्ति की गयी थी वही बच्चों को पढ़ाने का काम करता था, इस व्यक्ति को गांव वाले धान या कुछ पैसे दिया करते थे, उम्मीद थी कि कभी ये स्कूल सरकारी हो जायेगा, सरकार ने 15 वर्ष पूर्व एक सर्वे भी कराया किन्तु केवल ऐसे स्कूल ही सरकारी हो सके, जिनके गांव के लोग पहुंच वाले थे या किसी राजनैतिक दल से जुड़े थे, शेष लगभग 15,000 वेन्चर स्कूल वैसे ही रह गये, समय बीतने पर असम की परिस्थिति बदली, और ये स्कूल बदहाल स्थिति में हो गये, कुछ स्थानों पर शिक्षक अभी भी बिना किसी सहयोग के पढ़ाये जा रहे हैं, गांव के लोग यथा सम्भव सहयोग करते हैं किन्तु अधिकांश शिक्षक कठिनाई से ही जीवनयापन कर पा रहे हैं, गांव के लोग इन शिक्षकों का बहुत सम्मान करते हैं. मुझे लगा कि इन स्कूलों से गांव वालों का भावनात्मक रिश्ता है. यदि इनको सरकारी या किसी अन्य स्रोत से सहायता मिल जाय तो बिना किसी इन्फ्रास्ट्रक्चर का व्यय किये शिक्षा का अच्छा विकास सम्भव है.

प्रस्तुतीकरण:

वल्लभ पाण्डेय, गोविन्द शर्मा एवं प्रनब सइकिया
'आशा' वाराणसी
28th Oct, 2006
Contact Nos: 9415256848(Vallabh)
9936864474(Govind Sharma)
03624-287364 (Pranab Saikia)
ashakashi@gmail.com , ashakashi@yahoo.com
govind_asha@yahoo.com
asha_pranab@yahoo.com